मुद्रा के मूल्य का अर्थ
(Meaning of value of Money)

वास्तव मे देखा जाय तो मुद्रा का अपने आपमे कोई महत्व नही है। मुद्रा का महत्व इसलिए है कि इसके माध्यम से वस्तुएँ और सेवाएँ खरीदी जा सकती है अथवा मुद्रा मे क्रय-शक्ति (Purchasing Power) होती है। केन्स (Keynes) के अनुसार "मुद्रा मे विनिमय-मूल्य के सिवा अथवा दूसरे शब्दो मे, जिन वस्तुओ को यह खरीद सकती है उनकी उपयोगिता के सिवा दूसरी कोई उपयोगिता नही होती।" (Money as such has no utility except what is dervided from its exchange value, that is to say, from the utility of the things which it can buy.) अतः मुद्रा की क्रय-शक्ति ही उसका मूल्य है। क्राउथर (Crowther) के शब्दो मे "मुद्रा जो खरीदेगी वही इसका मूल्य है।" (The value of money is what it will buy.) इसी प्रकार रॉबर्टसन (Robertson) के अनुसार "मुद्रा के मूल्य से हमारा मतलब वस्तुओ की उस मात्रा से है जो साधारणतः मुद्रा की एक इकाई से विनिमय मे प्राप्त होती है।" (By value of money we mean the amount of things in general which will be given in exchange for a unit of money.) उदाहरण के लिए यदि 1 रुपये मे एक पेंसिल या 2 सेब अथवा आधा किलो चीनी मिलती होती हम कह सकते है कि एक रुपये का मूल्य एक पेंसिल या 2 सेब अथवा आधा किलो चीनी के बराबर है। वास्तव मे वस्तुओ के मूल्य मे एवं मुद्रा के मूल्य मे विपरीत सम्बन्ध है। उदाहरण के लिए मान लिया जाय कि एक कलम का मूल्य पहले 4 रुपये था किन्तु अब मूल्य बढकर 8 रुपये हो गया है। यहाँ कलम के मूल्य मे वृद्धि होने से मुद्रा के मूल्य मे वृद्धि होने से मुद्रा के मूल्य मे कमी हुई है क्योकि जिस कलम के लिए पहले 4 रुपये देने पड़ते थे ठीक उसी कलम के लिए अब 8 रुपये देने पड़ते है। इसका मतलब यह हुआ कि पहले 4 रुपये की जो क्रय शक्ति थी वही क्रय-शक्ति अब 8 रुपये की है। पहले यदि 8 रुपये खर्च किये जाते तो 2 कलमे मिल सकती थी, लेकिन कलम के मूल्य बढने से अब 8 रुपये मे केवल एक ही कलम प्राप्त होता है। इसी प्रकार यदि कलम का मूल्य घटकर 2 रुपये हो जाय तो मुद्रा का मूल्य बढ जायेगा क्योकि अब 2 रुपये मे ही पहले 4 रुपये मे मिलने वाली कलम खरीदी जा सकती है। इस प्रकार वस्तु के मूल्य मे वृद्धि होने से मुद्रा का मूल्य घटता है तथा वस्तु के मूल्य मे कमी होने से मुद्रा का मूल्य बढता है। अतः प्रो० फिशर (Irving Fisher) ने ठीक ही कहा है— "मुद्रा की क्रय-शक्ति मूल्य-स्तर के ठीक विपरीत

है इसलिए इसका अध्ययन - मूल्य स्तरों के समान ही होता है।"
(The purchasing power of money is the reciprocal of the level of prices, so that the study of purchasing power of money is identical with the study of price level.) लेकिन प्रश्न यह है कि मुद्रा का मूल्य वस्तु के किस मूल्य के आधार पर मापी जाय। वस्तुओं का थोक मूल्य एवं खुदरा मूल्य दोनों होता है तथा दोनों मूल्यों में विभिन्नता होती है। मजदूरों की सेवाओं का मूल्य अथवा मजदूरी में भी विभिन्नता पायी जाती है। इसके परिणाम स्वरूप मुद्रा की क्रय-शक्ति अथवा मूल्य में विभिन्नता हो सकती है। इस कठिनाई से बचने के लिए तीन प्रामाणिक मूल्यों (Standard values) की धारणा की स्थापना की गयी है जिनके आधार पर मुद्रा के मूल्य को मापा जाता है।-

(1) थोक मूल्य (Wholesale value):- थोक बाजार में वस्तुओं में प्रचलित मूल्य को थोक मूल्य कहते हैं और इसके आधार पर मुद्रा का जो मूल्य तैयार किया जाता है उसे मुद्रा का थोक मूल्य (Wholesale value of Money) कहते हैं। थोक मूल्य का संकलन करना बहुत ही आसान होता है और मुद्रा का मूल्य प्रायः इसी के आधार पर व्यक्त किया जाता है।

(2) खुदरा मूल्य (Retail value):- खुदरा बाजार में वस्तुओं के प्रचलित मूल्य को खुदरा कहते हैं। खुदरा मूल्य पर ही दैनिक उपयोग में आनेवाली वस्तुओं की खरीद-बिक्री होती है। खुदरा मूल्य के आधार पर तैयार किया गया मुद्रा का मूल्य मुद्रा का खुदरा मूल्य (Retail value of Money) कहलाता है। खुदरा मूल्य को प्राप्त करने में कठिनाई होती है क्योंकि विभिन्न स्थानों पर ये मूल्य अलग अलग होते हैं तथा इनमें बहुत अधिक उतार-चढ़ाव आता रहता है।

(3) श्रम-मूल्य (Labour value):- मुद्रा का जो मूल्य मजदूरों की मजदूरी के आधार पर निश्चित किया जाता है उसे मुद्रा का श्रम-मूल्य (Labour value of Money) कहते हैं। चूँकि विभिन्न प्रकार के मजदूरों की मजदूरी की दरों में काफी विभिन्नता पायी जाती है, अतः मुद्रा के श्रम को प्राप्त करने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

इस प्रकार मूल्य-स्तर मुख्यतः तीन होते हैं और उनके आधार पर मुद्रा का मूल्य भी अलग-अलग होता है। दूसरे शब्दों में, मुद्रा के मूल्य को एक विशिष्ट प्रकार से ही व्यक्त किया जा सकता है। अतः क्राउथर (Crowther) ने ठीक ही कहा है - "बिना विशेष पद के 'मुद्रा का मूल्य' वाक्यांश अर्थहीन या बेकार है।